हिन्दी विभाग

आर.के.एस.डी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कैथल

नैक 'ए' श्रेणी मूल्यांकित

(संबद्ध कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र)

एवं

हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

के संयुक्त तत्त्वावधान में

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

लोकविधा सांग : स्वरूप एवं लोक की सांस्कृतिक विरासत

बृहस्पतिवार 28 मार्च 2019

साकेत मंगल एडवोकेट
प्रधान, रा.वि.स. एवं प्रबन्धक समिति

अश्विनी शोरेवाला
उप-प्रधान रा.वि.स.

नरेश शोरेवाला
उप-प्रधान प्रबंधक समिति

पंकज बंसल
महासचिव, रा.वि.स. एवं प्रबंधक समिति

सुनील चौधरी
कोषाध्यक्ष, रा.वि.स.

श्याम बंसल
कोषाध्यक्ष प्रबंधक समिति

नवनीत गोयल
संयोजक, सांध्य-सत्र

डॉ. हरिन्द्र गुप्ता
प्राचार्य प्रभारी सांध्य-सत्र

डॉ. आर.पी. मॉन
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डॉ. ओ.पी. सैनी
सह-संयोजक

डॉ. बिजेन्द्र कुमार
आयोजन-सचिव

डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर
संयोजक

डॉ. एस.के. गोयल
प्राचार्य

आयोजन समिति

- डॉ. आर.पी. मॉन (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग)
- डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर (संयोजक)
- डॉ. ओ.पी. सैनी (सह-संयोजक)
- डॉ. बिजेन्द्र कुमार (आयोजन सचिव)
- डॉ. शरद गौड़
- डॉ. दीपशिखा
- डॉ. रेणु कंसल
- डॉ. वर्षा रानी
- प्रो. संजीव कुमार
- प्रो. सुनीता रानी
- प्रो. कुसुम रानी
- डॉ. राजीव शर्मा

उद्घाटन सत्र (प्रातः 10.00 बजे)

अध्यक्षता : प्रो. लालचंद गुप्त मंगल पूर्व अधिष्ठाता, कला एवं भाषा संकाय, पूर्व वरिष्ठतम प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग कु.वि. कुरुक्षेत्र, वरिष्ठ अध्येता (हिन्दी साहित्य) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, साहित्य अकादमी (राष्ट्रीय साहित्य संस्थान) नई दिल्ली।

मुख्य अतिथि : डॉ. पूर्णमल गौड़ निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला, हरियाणा एवं पूर्व प्राचार्य डी.ए.वी. कॉलेज करनाल।

बीज-वक्तव्य : डॉ. पूर्णचंद शर्मा पूर्व प्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक एवं सुप्रसिद्ध लोक साहित्य संपादक एवं लोक साहित्य संकलन-कर्त्ता।

मुख्य वक्ता : श्री रत्नकुमार सांभरिया सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला द्वारा हरियाणा गौरव पुरस्कार से सम्मानित।

समापन-सत्र (अपराह्न 4.00 बजे)

अध्यक्षता : डॉ. पी.सी. मित्तल, पूर्वाध्यक्ष हिन्दी विभाग
आर.के.एस.डी. महाविद्यालय एवं
प्रधान आर.के.एस.डी. कॉलेज ऑफ फार्मेसी

गरिमामय उपस्थिति : डॉ. राणाप्रताप गन्नौरी, डॉ. वी.डी. शर्मा, डॉ. मंजुला गुप्ता, डॉ. भारत भूषण शर्मा, प्रो. मीना कुमारी एवं डॉ. जगदीश प्रसाद (हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी कुरुक्षेत्र)

आप सादर आमन्त्रित हैं।

दूरभाष : 01746-222368, 235119 फैक्स 234668
वेबसाईट www.rksdcollege.com, ई-मेल rksdcollegektl@yahoo.com

सेमिनार रिपोर्ट - 28 मार्च 2019

- 28 मार्च 2019 को हिन्दी विभाग, आर.के.एस.डी. (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, कैथल एवं हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी, कुरूक्षेत्र, हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में 'एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय 'लोकविधा सांग : स्वरूप एवं लोक की सांस्कृतिक विरासत' रहा।
- संगोष्ठी का शुभारंभ प्रबंधक समिति के प्रधान श्री साकेत मंगल, एडवोकेट एवं मंचासीन सभी आदरणीय महानुभावों द्वारा विद्या की देवी सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पण के साथ हुआ।
- भारतीय संस्कृति के अनुरूप विभाग के छात्र-छात्राओं द्वारा अतिथियों को तिलक लगाया गया और फिर सभी को बैज लगाकर सुशोभित किया गया।
- संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. आर.पी. मॉन ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा एवं संगोष्ठी के विषय पर अपने विचार रखे।
- प्राचार्य डॉ. संजय गोयल ने मंचासीन सभी अतिथियों एवं विद्वान वक्ताओं का सहर्ष पुष्पदल एवं माल्यार्पण के साथ स्वागत किया और हिन्दी विभाग को इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी के लिए बधाई दी।
- उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. पूर्णमल गौड़, निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला हरियाणा रहे। उन्होंने इस अवसर पर कहा - ''इस प्रकार की संगोष्ठी विद्यार्थियों एवं शिक्षक वर्ग के लिए अति महत्त्वपूर्ण होती है और इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहने चाहिए। अकादमी के निदेशक होने के नाते उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों की रूपरेखा बनाकर आप अकादमी को भेजते रहें और अकादमी को ओर से वित्तपोषण की कमी मैं नहीं आने दूंगा।'' गौड़ साहब ने सहर्ष सभी से अपने-अपने मूल्यवान सुझाव प्रदान करने के लिए भी प्रार्थना की।
- डॉ. पूर्णचंद शर्मा, पूर्व प्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक ने 'बीज वक्तव्य' देते हुए कहा - ''लोकतंत्र साहित्य के माध्यम से हमें लोक को समझने में आसानी होती है। हरियाणा में सांग विधा को साहित्यक रूप में सहेजने का काम बहुत देर बाद शुरू हुआ। अनेक सांग-रचयिता मौखिक रूप में ही गुमनाम हो गए। उनके साथ ही उनका कृतित्व भी समाप्त हो गया। इस संगोष्ठी के माध्यम से ऐसे लोककवियों और सांगियों के साहित्य पर विस्तार से चर्चा की जायेगी।''
- उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला द्वारा 'हरियाणा गौरव' पुरस्कार से सम्मानित श्री रत्नाकर सांभरिया ने शिरकत की। उन्होंने सांग पर बोलते हुए कहा कि - ''सांग हरियाणवी लोक का उद्गाता, मार्गदर्शक और अपरिहार्य हस्तक्षेप रहा है। सांग हरियाणा, उतरप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली आदि क्षेत्रों में मनोरंजन का एकमात्र साधन था। यह जीवंत विधा थी। इसका मंच चारों ओर से खुला होता था। पुरूष कलाकार ही नारी पात्रों का अभिनय करते थे। इस विधा का एक लोक कल्याणकारी पक्ष भी था। जब भी किसी सामूहिक कार्य के लिए धन की आवश्यकता होती थी, तो सांग के माध्यम से दान एकत्रित किया जाता था। इस प्रकार सांग मनोरंजन के साथ लोक कल्याण का कार्य करते थे।''

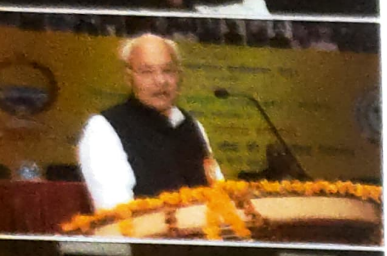
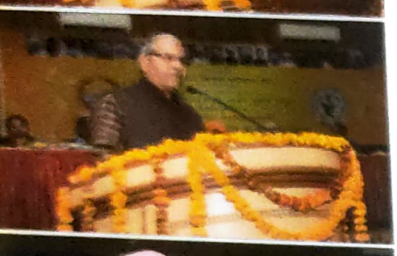

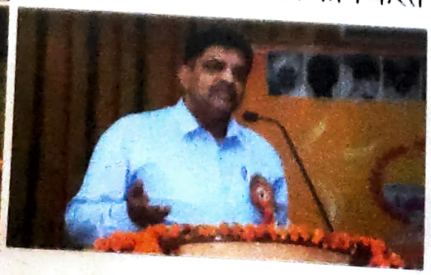

- उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष के रूप में प्रो. लालचंद गुप्त मंगल, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र रहे। उन्होंने अध्यक्षीय टिप्पणी करतु हुए अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए- ''किसी भी प्रदेश का लोकसाहित्य उसकी सांस्कृतिक धरोहर होता है, जिसका संरक्षण अति आवश्यक है। क्योंकि इस प्रकार की महत्वपूर्ण विधाएं यदि संरक्षित होंगी तो ही लोक का कल्याण एवं मनोरंजन होता रहेगा। संरक्षण की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी हम सबकी है, जिसे हमें बाखूबी निभाना चाहिए।''
- उद्घाटन सत्र के अंत में संगोष्ठी के संयोजक डॉ. राजेन्द्र बड़गुजर ने सभी विद्वान वक्ताओं का धन्यवाद किया।
- समापन सत्र में डॉ. विजय दत्त शर्मा पूर्व असो. प्रोफेसर हिन्दी विभाग, आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि- ''सांग में हरियाणा के लोकजीवन के हर पहलु को चित्रित किया गया है। भाषा पक्ष की दृष्टि से भी इस पर और अधिक चिंतन, मनन एवं अध्ययन की आवश्यकता है।''
- इसी सत्र में डॉ. कृष्ण चंद रल्हान, पूर्व रजिस्ट्रार, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र ने अपने वक्तव्य में कहा - ''सांग एक ऐसी विधा रही, जिसमें बहुत से पौराणिक प्रसंगों को लेकर सांग किए गए। जिससे अनपढ़ एवं सीधे-साधे दर्शकों एवं श्रोताओं को पुराणों के बारे में जानकारी हासिल हुई।''
- इस सत्र के अन्य विद्वान वक्ताओं में डॉ. ईश्वर सागवाल एवं डॉ. ऋषिपाल, जनता कॉलेज, कौल, डॉ. राममेहर रेढू, किसान कॉलेज, जींद, डॉ. मंजु रेढू, गवर्नमेंट कॉलेज, जींद, डॉ. रवीन्द्र गासो, डी.ए.वी. कॉलेज, पूंडरी आदि ने भी अपने विद्वतापूर्ण विचार रखे।
- इस सत्र के अंतिम पड़ाव में लगभग 150 प्रतिभागियों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों ने विद्वान वक्ताओं से प्रश्न पूछकर ज्ञानवर्धन भी किया।
- समापन सत्र के अध्यक्ष की भूमिका डॉ. प्रेमचंद मित्तल, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग एवं प्रधान आर.के. एस.डी. कॉलेज ऑफ फार्मेसी, कैथल ने निभाई। उन्होंने अध्यक्षीय संभाषण में कहा-''सांग हरियाणवी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस प्रकार की विधाओं को जिंदा रखकर ही हम अपनी हरियाणवी संस्कृति को जिंदा रख सकते हैं।''
- तत्पश्चात समापन सत्र के अध्यक्ष डॉ. मितल ने प्रबंधक समिति के प्रधान श्री साकेत मंगल, एडवोकेट, प्राचार्य डॉ. संजय गोयल, विभागाध्यक्ष डॉ. आर.पी. मॉन, संयोजक डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर, सह-संयोजक डॉ. ओ.पी. सैनी, आयोजन सचिव डॉ. बिजेन्द्र कुमार, हिन्दी विभाग के सदस्य डॉ. शरद गौड़, डॉ. दीप शिखा, डॉ. वर्षा, श्री संजीव कुमार, मैडम सुनीता, डॉ. रेणु कंसल, डॉ. राजीव शर्मा, मैडम कुसुमलता, अजय (विभाग कर्मचारी) आदि को राष्ट्रीय संगोष्ठी की सफलता पर बधाई दी।
- इसके बाद प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।
- अंत में डॉ. ओ.पी. सैनी ने विद्वान वक्ताओं, अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सभागार में उपस्थित सभी का हृदयपूर्वक धन्यवाद किया।

सेमिनार रिपोर्ट - 28 मार्च 2019

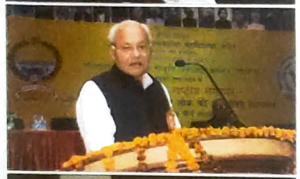

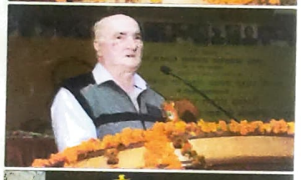

- 28 मार्च 2019 को हिन्दी विभाग, आर.के.एस.डी. (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, कैथल एवं हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी, कुरूक्षेत्र, हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में 'एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय 'लोकविधा सांग : स्वरूप एवं लोक की सांस्कृतिक विरासत' रहा।
- संगोष्ठी का शुभारंभ प्रबंधक समिति के प्रधान श्री साकेत मंगल, एडवोकेट एवं मंचासीन सभी आदरणीय महानुभावों द्वारा विद्या की देवी सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पण के साथ हुआ।
- भारतीय संस्कृति के अनुरूप विभाग के छात्र-छात्राओं द्वारा अतिथियों को तिलक लगाया गया और फिर सभी को बैज लगाकर सुशोभित किया गया।
- संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. आर.पी. मॉन ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा एवं संगोष्ठी के विषय पर अपने विचार रखे।
- प्राचार्य डॉ. संजय गोयल ने मंचासीन सभी अतिथियों एवं विद्वान वक्ताओं का सहर्ष पुष्पदल व माल्यार्पण के साथ स्वागत किया और हिन्दी विभाग को इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी के लिए बधाई दी।
- उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. पूर्णमल गौड़, निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला हरियाणा रहे। उन्होंने इस अवसर पर कहा - ''इस प्रकार की संगोष्ठी विद्यार्थियों एवं शिक्षक वर्ग के लि अति महत्त्वपूर्ण होती है और इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहने चाहिए। अकादमी के निदेशक होने के ना उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों की रूपरेखा बनाकर आप अकादमी को भेजते रहें और अकादम को ओर से वित्तपोषण की कमी मैं नहीं आने दूंगा।'' गौड़ साहब ने सहर्ष सभी से अपने-अपने मूल्यवान सुझाव प्रदान करने के लिए भी प्रार्थना की।
- डॉ. पूर्णचंद शर्मा, पूर्व प्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक ने 'बीज वक्तव्य' देते हुए कहा - ''लोकतंत्र साहित्य के माध्यम से हमें लोक को समझने में आसानी होती है। हरियाणा में सांग विधा को साहित्यक रूप में सहेजने का काम बहुत देर बाद शुरू हुआ। अनेक सांग-रचयिता मौखिक रूप में ही गुमनाम हो गए। उनके साथ ही उनका कृतित्व भी समाप्त हो गया। इस संगोष्ठी के माध्यम से ऐसे लोककवियों और सांगियों के साहित्य पर विस्तार से चर्चा की जायेगी।''
- उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला द्वारा 'हरियाणा गौरव' पुरस्कार से सम्मानित श्री रत्नाकर सांभरिया ने शिरकत की। उन्होंने सांग पर बोलते हुए कहा कि - ''सांग हरियाणवी लोक का उद्गाता, मार्गदर्शक और अपरिहार्य हस्तक्षेप रहा है। सांग हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली आदि क्षेत्रों में मनोरंजन का एकमात्र साधन था। यह जीवंत विधा थी। इसका मंच चारों ओर से खुला होता था। पुरूष कलाकार ही नारी पात्रों का अभिनय करते थे। इस विधा का एक लोक कल्याणकारी पक्ष भी था। जब भी किसी सामूहिक कार्य के लिए धन की आवश्यकता होती थी, तो सांग के माध्यम से दान एकत्रित किया जाता था। इस प्रकार सांग मनोरंजन एवं लोक कल्याण का कार्य करते थे।''

- उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष के रूप में प्रो. लालचंद गुप्त मंगल, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र रहे। उन्होंने अध्यक्षीय टिप्पणी करतु हुए अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए- ''किसी भी प्रदेश का लोकसाहित्य उसकी सांस्कृतिक धरोहर होता है, जिसका संरक्षण अति आवश्यक है। क्योंकि इस प्रकार की महत्वपूर्ण विधाएं यदि संरक्षित होंगी तो ही लोक का कल्याण एवं मनोरंजन होता रहेगा। संरक्षण की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी हम सबकी है, जिसे हमें बाखूबी निभाना चाहिए।''
- उद्घाटन सत्र के अंत में संगोष्ठी के संयोजक डॉ. राजेन्द्र बड़गुजर ने सभी विद्वान वक्ताओं का धन्यवाद किया।
- समापन सत्र में डॉ. विजय दत्त शर्मा पूर्व असो. प्रोफेसर हिन्दी विभाग, आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि- ''सांग में हरियाणा के लोकजीवन के हर पहलु को चित्रित किया गया है। भाषा पक्ष की दृष्टि से भी इस पर और अधिक चिंतन, मनन एवं अध्ययन की आवश्यकता है।''
- इसी सत्र में डॉ. कृष्ण चंद रल्हान, पूर्व रजिस्ट्रार, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र ने अपने वक्तव्य में कहा - ''सांग एक ऐसी विधा रही, जिसमें बहुत से पौराणिक प्रसंगों को लेकर सांग किए गए। जिससे अनपढ़ एवं सीधे-साधे दर्शकों एवं श्रोताओं को पुराणों के बारे में जानकारी हासिल हुई।''
- इस सत्र के अन्य विद्वान वक्ताओं में डॉ. ईश्वर सागवाल एवं डॉ. ऋषिपाल, जनता कॉलेज, कौल, डॉ. राममेहर रेढू, किसान कॉलेज, जींद, डॉ. मंजु रेढू, गवर्नमेंट कॉलेज, जींद, डॉ. रवीन्द्र गासो, डी.ए.वी. कॉलेज, पूंडरी आदि ने भी अपने विद्वतापूर्ण विचार रखे।
- इस सत्र के अंतिम पड़ाव में लगभग 150 प्रतिभागियों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों ने विद्वान वक्ताओं से प्रश्न पूछकर ज्ञानवर्धन भी किया।
- समापन सत्र के अध्यक्ष की भूमिका डॉ. प्रेमचंद मित्तल, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग एवं प्रधान आर.के. एस.डी. कॉलेज ऑफ फार्मेसी, कैथल ने निभाई। उन्होंने अध्यक्षीय संभाषण में कहा-''सांग हरियाणवी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस प्रकार की विधाओं को जिंदा रखकर ही हम अपनी हरियाणवी संस्कृति को जिंदा रख सकते हैं।''
- तत्पश्चात समापन सत्र के अध्यक्ष डॉ. मित्तल ने प्रबंधक समिति के प्रधान श्री साकेत मंगल, एडवोकेट, प्राचार्य डॉ. संजय गोयल, विभागाध्यक्ष डॉ. आर.पी. मॉन, संयोजक डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर, सह-संयोजक डॉ. ओ.पी. सैनी, आयोजन सचिव डॉ. बिजेन्द्र कुमार, हिन्दी विभाग के सदस्य डॉ. शरद गौड़, डॉ. दीप शिखा, डॉ. वर्षा, श्री संजीव कुमार, मैडम सुनीता, डॉ. रेणु कंसल, डॉ. राजीव शर्मा, मैडम कुसुमलता, अजय (विभाग कर्मचारी) आदि को राष्ट्रीय संगोष्ठी की सफलता पर बधाई दी।
- इसके बाद प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।
- अंत में डॉ. ओ.पी. सैनी ने विद्वान वक्ताओं, अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सभागार में उपस्थित सभी का हृदयपूर्वक धन्यवाद किया।